प्रा. डॉ. धुमाळ यादवराव बाबुराव
एम्.ए;पीएच्.डी.
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड

— प्रमाणपत्र —

यह प्रमाणित किया जाता है कि, कु. प्रभावळकर वैशाली सदानंद ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल.(हिंन्दी) उपाधि के लिए " से.रा.यात्री के उपन्यासों का अनुशीलन (सुबह की तलाश, बीच की दरार, दराजों में बंद दस्तावेज के विशेष संदर्भ के रूप में " शीर्षक से प्रस्तुत लघु–शोध–प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है । यह शोधार्थी की मौलिक कृति है । जो तथ्य इस लघु–शोध–प्रबंध में प्रस्तुत किये गये है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है । प्रस्तुत लघु–शोध–प्रबंध कला विद्या शाखा (Faculty of Arts) के अंतर्गत हिंदी विषय से संबधित उपन्यास साहित्य–विधा में सन्निविष्ट है । कु. वैशाली सदानंद प्रभावळकर के प्रस्तुत शोध–कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

कराड

दिनांक — 30 जून 2000

प्रा. डॉ. वाय.बी.धुमाळ

शोध — निर्देशक

प्रा. डॉ. वाय. बी. धुमाळ
रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
वेणूताई चव्हाण कॉलेज
कराड (महाराष्ट्र)

प्रा. डॉ. अर्जुन चव्हाण
एम्.ए;पीएच्.डी.
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

– प्रमाणपत्र –

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु–शोध–प्रबंध को परीक्षण हेतु अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर

दिनांक :– 30 जून, 2000

प्रा. डॉ. अर्जुन चव्हाण

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

— प्रख्यापन —

यह लघु–शोध–प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल.के लघु–शोध–प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

कु. व्ही.एस.प्रभावळकर

शोध–छात्रा

पाटण

दिनांक :– 30 जून 2000

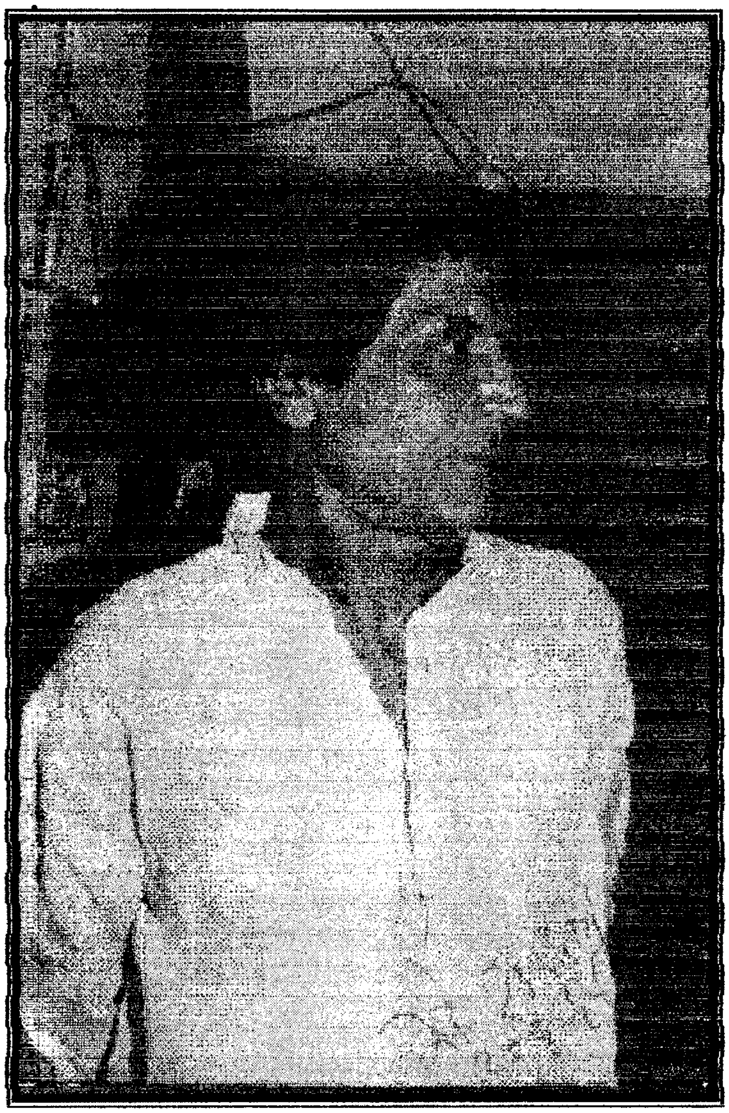

से.रा. यात्री
जन्म 31 ऑगस्ट 1933

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय – से.रा.यात्री : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

❖ से.रा.यात्री का व्यक्ति–परिचय
- जन्म
- सेवाराम से बने से.रा.
- पिता
- माता
- पारीवारिक स्थिती
- शिक्षा–दीक्षा
- नौकरी

❖ व्यक्तित्व की विशेषताएँ :–
- बहिरंग व्यक्तित्व
- अंतरंग व्यक्तित्व
- से.रा.यात्री का कृतित्व :–
- कहानीसंग्रह
- उपन्यास
- व्यंग्यसंग्रह
- संस्मरण
- संपादन
- निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय – 'से.रा.यात्री के आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु का अनुशीलन'
- दराजों में बंद दस्तावेज
- बीच की दरार
- सुबह की तलाश
- निष्कर्ष

तृतीय अध्याय – 'से.रा.यात्री के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित
पात्र–परियोजना का अनुशीलन'

❖ उपन्यास और पात्र परियोजना –

प्रमुख पात्र –
गौन पात्र –
से.रा.यात्री के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित पात्र
करूणा
परेश
मौसी
दराजों में बंद दस्तावेज में चित्रित गौन पात्र

'बीच की दरार' उपन्यास में चित्रित पात्र–परियोजना का अनुशीलन
नागपाल
नीना
मिस्टर मलिक
गौन पात्र

'सुबह की तलाश' उपन्यास में चित्रित पात्र–परियोजना का अनुशीलन
सतीश
बीना
गौन पात्र
निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय – 'से.रा.यात्री के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन'
उपन्यास और समस्याएँ

से.रा.यात्री के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ

नारी–शोषण
मानसिक कुंठा की समस्या
कॉलगर्ल की समस्या
आर्थिक दुर्बलता की समस्या
पति–पत्नी–तनाव की समस्या
बेकारी की समस्या

दहेज की समस्यां
विवाह की समस्या
निष्कर्ष

पंचम अध्याय – 'से.रा.यात्री के अन्य महत्वपूर्ण उपलब्ध उपन्यासों की कथावस्तु का अनुशीलन'

'लौटते हुए'
अनजान राहों का सफर
कई अंधेरों के पार

पष्ठ अध्याय – 'से.रा.यात्री के आलोच्च उपन्यासों की भाषा–शैली का अनुशीलन'

उपन्यास और भाषा –
शब्दों के विविध रूप
ग्रामीण भाषा
विशेषण
मुहावरें
कहावतें
सुक्तियॉं
वाक्य विन्यास
व्यंग्य
निष्कर्ष

❖ शैली
वर्णनात्मक शैली
साक्षात्कार शैली
डायरी शैली
संवाद शैली
पत्रात्मक शैली
पूर्व–दिप्ति शैली
चेतना प्रवाह शैली
निष्कर्ष

❖ उपसंहार

प्रस्तावना

स्वतंत्रता के बाद हिंदी उपन्यासकारों की नयी पीढ़ी ने विषय और अभिव्यक्ति दोनों दृष्टियों से लिखना शुरु किया । जनता की जीति - जागती ज्वलंत समस्याओं का, उसकी परिस्थितियोंका तथा प्रतिक्रियाओं का सूक्ष्म निरीक्षण एवं परीक्षण करके समाज के सुख - दु:ख तथा आशा और आकांक्षाओं को उपन्यास की विषय वस्तु बनाने का प्रयास किया हैं । साठोत्तरी कालखंड में मानवी जीवन के विविध क्षेत्रों से संबधित भिन्न - भिन्न समस्याओं का चित्रण उपन्यास में करने का कार्य अनेक उपन्यासकारों ने किया है । सामाजिक प्रश्नों का चित्रण करते समय नयी पीढ़ी ने उन प्रश्नों को गहन स्तर पर सत्य का स्पर्श करके अपनी कृति को प्रगतिशील बनाया हैं । स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में मनोरंजन के बजाय समस्याप्रधान उपन्यास का निर्माण होने लगा, जिनमें समाज जाति व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, बंद. मोर्चा, आंदोलन, नारी-शोषण, दहेज प्रथा, आर्थिक समस्या, पति-पत्नी तनाव की समस्या आदि समस्याओं को छूने का अनेक उपन्यासकारों ने सफल प्रयत्न किया हैं ।

आज़ादी के बाद नये उत्पादनों और नयी सुविधाओं के बीच सामान्य और मध्यवर्गीय व्यक्ति अपने आपको और भी अधिक अभावग्रस्त महसूस करता रहा । अफसरशाही तथा भ्रष्टाचार भी इतना बढ़ गया कि सामान्य आदमी को आजादी का एहसास तक नहीं हुआ । शिक्षक, क्लर्क, ड्राफ्टमन, छोटा व्यवसायी, पत्रकार, नगरपालिका का कर्मचारी, सैल्समन ऐसे सामान्य लोगों को यात्रीजी ने अपने लेखन का विषय बनाया है । कॉलगर्ल जैसी भयावह समस्या, स्त्री - पुरुष के बीच के संबंधों में आये तनाव, परिवारों में व्याप्त अशांति, दु:ख, संघर्ष और इसके पीछे होने वाली प्रवृत्ति को यात्रीने विषयवस्तु में महत्व दिया हैं । से. रा. यात्रीजी का जीवनपट देखने के बाद ऐसा लगता है कि जो जीवन में छोटे-छोटे सुख नहीं पा सका वह अपने चरित्र को काल्पनिक सुख क्या देगा ? दो सौ कहानियाँ और चौबीस से जादा उपन्यास लिखकर भी यात्रीजी उपन्यास क्षेत्र में अपना स्थान नहीं जमा सके । यात्रीजीने समकालीन कहानी, अकहानी आंदोलनों में भाग नहीं लिया ।

यात्रीजी अभावग्रस्त परिवार में पले किन्तु इसी अभाव के कारण उनके जीवन में कुत्सितता का निर्माण नहीं हुआ । यात्रीजी की पूरी जिंदगी गतिशिल हैं, इसमें ठहराओं के बावजूद भी उर्ध्वगामिता अधिक देखने को मिलती है । उनका स्वभाव मातृभक्ति से भरा हुआ है और इसी कारण उनके नारी विषयक विचार अत्यंत सरल, बहुत - ही

संयमी, स्वच्छ और पारदर्शी हैं । से. रा. यात्रीजी के अधिकांश नारी पात्र शिक्षित और स्वतंत्र विचारों से परिपूर्ण दिखाई देते हैं । स्त्री - पुरुषों के बीच के संबंधो में आये परिवर्तन को तो उनके उपन्यासों में देखा जा सकता हैं । यात्रीजी ने स्त्री - पुरुषों के संबंधों में आये परिवर्तनों की खोज की हैं । विवाह मात्र शारीरिक संसर्ग हैं या मानसिक बंधन इस कसौटी पर उन्होंने उपन्यास की रचना की हैं । उन्होंने समाज में स्थित विभिन्न प्रवृत्तियाँ, स्थितियाँ और समस्याओं का अलग अध्यपन करके अपने उपन्यास के चरित्र बनाये है, जिसमें सामाजिक स्तर की वास्तविकता को चित्रित करने का यात्रीजी का प्रयास रहा हैं ।

यात्रीजी ने 'दुसरे चेहरे (1971), अलग-अलग अस्वीकार, (1973) कालविदुषक, (1976) धरातल (1977), केवल पिता (1978), सिलसिला(1979), अकर्मक क्रिया (1981), टापू पर अकेले (1983), खंडित संवाद (1985), नया संबंध (1987), भाव तथा अन्य कहानियाँ (1993), अभय दान(1994), चर्चित कहानियाँ(1995), पूल टूटते हूए (1996), बहुरुपियाँ (1998), खारिज और बेदखल' (1998) इन कहानी संग्रह में लगभग दो सौ से अधिक कहानियों का लेखन किया हैं । उन्होंने सामान्य लोगों की मानसिकता को अपनी कहानियों का विषय बनाया और इतना ही नहीं तो व्यक्ती की असफलता, निष्क्रियता, द्विधा, अन्तर्द्वंद्व तथा उदासिनता के उन तमाम मानसिक स्थितियों का चित्रण भी किया है ।

यात्री एक सफल कहानीकार होने के साथ-साथ एक सफल उपन्यासकार भी है । उन्होंने कहानी में आम आदमी को एक भोक्ता के रुप में रखा हैं, तो उपन्यास में कहानी का आम आदमी अभिजात्य वर्ग में बदल गया हैं ।

यात्रीजीने अपने उपन्यास में आम आदमी को आदर्श के रुप में रखा हैं । यात्रीजी ने 'दराजों में बंद दस्तावेज' (1969) लौटते हुए (1974), चांदनी के आर-पार (1978), बीच की दरार (1978), कई अंधेरों के पार (1981), टूटते दायरे (1983), चादर के बाहर (1983), प्यासी नदी (1983), भटका मेघ(1984), आकाशचारी (1985), आत्मदाह (1985), प्रथम परिचय (1987), युध्द विराम (1987), जली रस्सी(1987), दिशा हारा (1987) अपरिचित शेष (1988), बेदखल अतीत (1993), आखिरी पाडाव (1993), सुबह की तलाश (1994), घटना सुत्र(1996), घर ना घाट(1997), ऐसे लगभग चौबीस उपन्यास लिखे हैं । कहानियों की अपेक्षा यात्रीजी ने उपन्यासों का भी निर्माण किया, जो पाठकों पर हावी हुए हैं । कई साहित्यकारों से उपेक्षित रहे सवालों को यात्री ने बडे कौशल

ने अपने उपन्यास में उठाया हैं । समाज में स्थित सवालों का विज्ञापन न करकें उपन्यास का विषय और आशय दोनों का सुंदर समन्वय स्थापित करने में यात्री सफल हुए है ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में हमने उनके बहुचर्चित तथा समस्याप्रधान उपन्यास 'दराजों में बंद दस्तावेज' (1969), बीच की दरार (1978) और सुबह की तलाश (1994) आदि को चुना हैं । यात्रीजी के लगभग सभी उपन्यास समस्या प्रधान हैं । सामाजिक परिवेश से जुड़े सभी सवालों का, समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण यात्रीजी अपने उपन्यास में करते हैं । शिक्षा ने नारी को एक नई दिशा दी हैं । उनके व्यक्तित्व का विकास हुआ हैं । वह अपने पलंग चुल्हे और आंगन को छोडकर सार्वजनिक क्षेत्रों में प्रविष्ट हुई हैं, लेकिन पुरुषप्रधान संस्कृति में अपना स्थान खोजने में नारियों को बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पडता हैं । इसी का चित्र यात्रीजीने दराजों में बंद दस्तावेज में 'करुणा' ब्दारा और 'बीच की दरार' में 'नीना' के माध्यम से स्पष्ट किया हैं । उनके अनेक उपन्यास प्रकाश में आये हैं । उनके अनेक उपन्यास विषय और आशय की दृष्टी से परिपूर्ण लगते हैं । यात्रीजी के आलोच्च उपन्यासों में (दराजों में बंद दस्तावेज, बीच की दरार, सुबह की तलाश) नारी-शोषण, मानसिक कुंठा, कॉलगर्ल की समस्या, आर्थिक दुर्बलता की समस्या, पति-पत्नी-तनाव की समस्या, बेकारी की समस्या, दहेज की समस्या, विवाह की समस्या आदि समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है। यात्रीजी ने आलोच्च उपन्यासों में नारी के अंतर्द्वंद्वों को प्राथमिकता देने के साथ-साथ नारी की उदारता, सहनशीलता, समर्पणशीलता, शक्तिमत्ता, को अध्यापन का विषय बनाया हैं । यात्रीजी की दृष्टि से संसार की मध्य वर्ग की स्त्री चाहे वह पतिता ही क्यों न हो यात्री के साहित्य सृजन की नजर से दुनिया के महान पुरुषों से भी अधिक आदरणीय हैं । नारी के संबंधि अपने विचारों कों यात्रीजी ने अपने उपन्यास का केंद्र बनाया है । उपन्यास साहित्य ने मनोरंजन के साथ-साथ समाज में स्थित ज्वालाग्राही समस्याओं को प्रमुखता से स्पष्ट किया हैं । समस्याप्रधान उपन्यासों की निर्मिती से समाज को नई दिशा दिखलाने का प्रयास उपन्यासकार करते हैं, जिसमें यात्रीजी का नाम भी बडे गर्व के साथ शामिल करना पडेगा ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को हमने छह अध्यायों में विभाजित किया हैं ।

प्रथम अध्याय - 'से.रा.यात्री व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में यात्रीजी का जन्म, बचपन, पारिवारीक स्थिति, शिक्षा-दिक्षा, बहिरंग और अंतरंग व्यक्तित्व को खोजने का प्रयास किया है ।

यात्रीजी ने लिखे हुए कहानी संग्रह, उपन्यास, संपादन तथा व्यंग्य संग्रह आदि कृतित्व के बारे में अधिक जानकारी देने का हमने प्रामाणिकता के साथ प्रयास किया हैं ।

द्वितीय अध्याय - 'से.रा.यात्री के आलोच्च उपन्यासों की संक्षिप्त कथावस्तु का अनुशीलन' में दराजों में बंद दस्तावेज (1969) बीच की दरार(1978) और सुबह की तलाश(1994) इन तीन उपन्यासों का संक्षिप्त में आशय प्रस्तुत करके कथावस्तु का अनुशीलन किया है ।

तृतीय अध्याय - 'से.रा. यात्री के आलोच्च उपन्यासों में चित्रित पात्र-परियोजना का अनुशीलन' में हमने यात्रीजी के आलोच्च उपन्यासों के पात्र-परियोजना तथा चरित्र का अध्ययन करने की कोशिश की हैं । 'दराजों में बंद दस्तावेज' के प्रमुख पात्र 'करुणा' 'मौसी', 'परेश' और 'बीच की दरार' के प्रमुख पात्र 'नागपाल,' 'नीना' और 'मि. मलिक' तथा 'सुबह की तलाश' के 'सतीश' 'बीना' और 'राकेश' इन चरित्रों का अनुशीलन करने के साथ-साथ इन उपन्यासों के गौन पात्रों का भी अनुशीलन किया है । पात्रों के व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पहलुओं की तलाश करके उनपर हावी युग-बोध को स्पष्ट किया हैं ।

चतुर्थ अध्याय - 'से.रा.यात्री के आलोच्च उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ 'में नारी-शोषण, मानसिक कुंठा की समस्या, कॉलगर्ल की समस्या, आर्थिक दुर्बलता की समस्या, बेकारी की समस्या, दहेज की समस्या, विवाह की समस्या, आदि समस्याओं का अध्ययन किया है । आज ये समस्याएँ कैसे भयावह रुप धारण करके समाज जीवन के विकास को रोक रही है, इसपर चिंतन किया हैं ।

पंचम अध्याय - 'से.रा.यात्री के अन्य उपलब्ध उपन्यासों की कथावस्तु का अनुशीलन में 'लौटते हुए' (1974), 'अनजान राहों का सफर' (1980), तथा कई 'अंधेरों के पार' (1981) आदि उपन्यासों का संक्षिप्त में आशय प्रस्तुत करके कथावस्तु का अनुशीलन किया है और इन उपन्यासों का सामाजिक महत्व विशद किया हैं ।

षष्ठ अध्याय - 'से.रा. यात्री के आलोच्च उपन्यासों की भाषा-शैली' में यात्रीजी की भाषा के विविध पहलू तथा शैली की विशेषताओं का अध्ययन किया है और जहाँ-तहाँ पाये

जाने वाली उनकी सुक्तियाँ, मुहावरे कहावतें आदि का भी अध्ययन किया हैं और यात्रीके उपन्यासों में भाषा-शैलिगत प्रयोगों को तलाशनेका प्रयास किया है ।

उपसंहार - इसमें उपलब्ध निष्कर्षो को समाकलित किया गया है । साथ-ही-साथ से.रा. यात्रीजी के आलोच्च उपन्यासों में चित्रित जनजिवन के विविध आयामों को तलाशने का प्रयास किया गया हैं ।

मेरा यह महद्‌भाग्य है कि मुझे आदरणीय गुरुवर्य प्रा. डॉ. वाय. बी. धुमाळजी के पांडित्यपूर्ण निर्देशन में शोधकार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ । धुमाळजी के प्रेरक, उदार तथा प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व के कारण ही में अपना शोध कार्य पूर्ण करने में सफल हो पायी । डॉ.वाय.बी. धुमाळजी के अमूल्य निर्देशों का ही यह शुभ परिणाम है कि मेरा यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्णत्व पा सका । श्रध्देय गुरुवर्य प्रा. डॉ. वाय. बी. धुमाळजी के साथ-साथ मेरे इस शोध-कार्य में सौ. धुमाळ मॅडम ने भी अपने स्नेहभाव से मेरे आत्मविश्वास को बरकरार रखने का कार्य किया । सौ. नयना धुमाळ के ममत्वपूर्ण व्यवहार के प्रति मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगी । प्रा. डॉ. वाय. बी. धुमाळजी के प्रति मेरे कृतज्ञतापूर्ण भावों के अभिव्यक्त करने में मेरा शब्द-भंडार असमर्थ है ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रा. डॉ.अर्जुन चव्हाण तथा प्रा.डॉ.पी.एस.पाटील जी के सहकार्य के लिए मैं उनकी ह्रदय से आभारी हूँ । मेरे इस लघु-शोध-कार्य में बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी की भी मैं आभारी हूँ । इसके अलावा मेरे सहपाठी हनुमंत शेवाळे, श्री. अशोक बाचुळकर, श्री. मिलींद साळवे, कु. मनिषा जाधव, कु. शोभा पाटील इनकी भी मैं ऋणी हूँ । मेरे आप्तस्वकीय जिनका इस कार्य में योगदान रहा है उनमें सौ. सुमन रंगराव जाधव, सौ.यशोदा प्रकाश सुतार, सौ.स्मिता जाधव, श्री. मनिषकुमार अंतवाल, सुभाष वाघमारे, बाळासाहेब व्हनखंडे, सुरेश शिंदे, डॉ. ए.वाय. शिंदे, डॉ.एस् एम गावडे, श्री. गुंडोपंत पाटील तथा मेरी ममेरी बहन कु. मेघना चंद्रकांत पै आदि की भी मैं कृतज्ञ हूँ । हमारे आप्त स्नेही श्री. बाळासाो चव्हाण, सौ. हौसाबाई धोंडिराम चव्हाण कराड, इनकी भी मैं तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ ।

मेरा यह शोध-कार्य मेरी माताजी श्रीमती सविता सदानंद प्रभावळकर तथा मेरे भाई श्री. दीपक सदानंद प्रभावळकर जी की प्रेरणा और सहाय्यता से ही पूरा कर सकी । इस कार्य में मुझे मेरी सास श्रीमती विजया सुतार और दादी वत्सला खंडू सुतार की भी प्रेरणा मिली इसीलिए मैं प्रति भी कृतज्ञ हूँ ।

इस लघु-शोध-प्रबंध कार्य के लिए स्वंय से.रा.यात्रीजी ने भी मुझे अपने पत्रोंद्वारा प्रेरणा दी है अत: मैं उनके प्रति भी आभारी हूँ । मेरा शोध-कार्य जिनकी प्रेरणा, सहायता के बिना पूरा होना नामुमकिन था वह मेरे पती श्री. विश्वास मारुती सुतार उनके प्रति अपने कृतज्ञ भावों को अभिव्यक्त करने में मैं और मेरे अल्फाज असमर्थ हैं । उनकी हौसलाअफजायी का ही यह नतीजा है कि आज मैं मेरा लघु-शोध-प्रबंध आपके संमुख प्रस्तुत करने में सफल हुई हूँ ।

इस प्रबंध का टंकन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य नंदकुमार देसाई और युवराज खाडे जी ने किया, उनके शीघ्र सहकार्य केलिए मैं उनकी भी आभारी हूँ ।